

अभ्यास प्रश्न

सही विकल्प चुनो -

1. कबीर गुरु और भगवान में किस से श्रेष्ठ मानते हैं?

क) गुरु को

2. गुरु को कबीर किसके समान बताते हैं?

(ख) कुम्हार

3. अमृत की खान किसे कहा गया है?

(ग) गुरु

4. किसके बराबर कोई पाप नहीं है

(ख) झूठ

5. कबीर को बुरा ढूँढने के क्रम में क्या मिला?

कबीर स्वयं को सबसे बुरा पाते हैं

प्रश्नों के उत्तर

1. कबीर ने गुरु को गोविंद से भी बड़ा क्यों बतलाया है?

उत्तर - कबीर ने गुरु को गोविंद से बड़ा इसलिए बताया है क्योंकि गुरु ही हमें ईश्वर से मिलने का रास्ता बताता है

2. गुरु शिष्य का विकास किस प्रकार करता है?

उत्तर - गुरु कुम्हार की तरह अपने शिष्य का विकास करता है वह उसके दोषों को दूर करता है तथा गुणों का महत्व बतलाता है गुरु ऊपर से शक्ति दिखाता है परंतु वह हमें सहारा देता है

3. सच को तब और झूठ को पाप क्यों कहा गया है?

उत्तर - सच से बड़ी तपस्या कोई नहीं है क्योंकि सच बोलना सबके बस में नहीं है सच बोलना एक कठिन परीक्षा के समान होता है झूठ पाप के समान है झूठे

, व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता

4. ईश्वर का स्मरण करने के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर - ईश्वर का स्मरण करने के लिए मन की एकाग्रता होना जरूरी है

5. क्या करने पर हमें दुख नहीं होगा?

उत्तर- सुख में भी ईश्वर का स्मरण करने पर हमें दुख नहीं होगा

6. लोग बुराई कहाँ ढूँढते हैं अंत में बुराई कहाँ मिलती है?

उत्तर - लोग बुराई दूसरों में ढूँढते हैं अंत में बुराई अपने आप में ही मिलती है

नीचे दिए गए शब्दों का सही रूप लिखो

काढ़े - निकालना काके- किसके मनवा - मन बेलरी - बेल

शिष - शिष्य दिसि - दिशा हिरदै - हृदय सहार - सहारा

पाय - पाँव सुमिरन - स्मरण साँच - सच

आशय स्पष्ट करो -

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप

जाके हिरदै साँच है ,ताके हिरदै आप

आशय - सच के बराबर कोई तप नहीं है और झूठ के बराबर कोई पाप नहीं है

ईश्वर सच्चे व्यक्ति के हृदय में बसता है

बुरा जो देखन में चला बुरा ना मिलिया कोय

जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा ना कोय

आशय - यदि हम दुनिया में बुरे व्यक्ति को खोजने निकलते हैं तो उनमें कोई

बुरा नहीं मिलता परंतु जब हम स्वयं के मन को टटोल ते हैं तो हम से बुरा कोई नहीं

